# “21वीं सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

# विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

**ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा**
**की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित**

# शोध-प्रारूप

**संकाय-मानविकी**
**विषय-हिन्दी**


**शोध-निर्देशिका**

**डॉ० मंजरी खरे**
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

**शोधप्रज्ञ**

**मलय नीरव**
पैट क्रमांक- E2209019
पिता– अनिल कुमार सिंह
वार्ड न०– 21, रतनपुर
पो०+जिला– बेगूसराय (बिहार)

# “21वीं सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

## भूमिका :

21वीं सदी के आरंभिक दशक को तीव्र सामाजिक परिवर्तन और सूचना के क्षेत्र में इन्टरनेट क्रांति का युग माना जाता है। हालांकि हर युग बदलाव को अपने साथ लेकर चला है लेकिन 21 वीं सदी में इसकी तीव्रता कहीं अधिक है। इस सदी में भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद और नव साम्राज्यवादी मूल्यों का प्रभाव समाज, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता पर दिख रहा है। पिछले दो दशक में समाज में कई सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। आज का समाज पहले की अपेक्षा वैचारिक रूप से ज्यादा खुला हुआ है। वह बंधन को अस्वीकार रहा है। इसका सकारात्मक प्रभाव हमारा आधी आबादी पर भी हुआ। आज महिलाएँ न केवल घर से बाहर निकल रही हैं बल्कि खुद को सफल नेतृत्वकर्ता भी साबित कर रही हैं। वह समाज के साथ-साथ साहित्य में भी नये-नये कीर्तिमान गढ़ रही हैं। संस्मरण साहित्य में भी वे अपने अस्तित्व, अपनी अस्मिता को एक सार्थक आयाम दे रही हैं। हम स्पष्टतः देख पाते रहे हैं कि जैसे-जैसे यह समाज बदल रहा वैसे-वैसे साहित्य भी और इसका विलोम भी उतना ही सत्य है। यही समाज और साहित्य की अन्योन्याश्रिता हमें साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने हेतु प्रेरित करता है। साहित्य के समाजशास्त्र का लक्ष्य कृति की केवल व्याख्या नहीं हैं। यह काम तो दूसरी आलोचना पद्धतियों में भी होता है। उसका लक्ष्य साहित्यिक कृति की सामाजिक अस्मिता की व्याख्या करना है। साहित्यिक कृति का स्वरूप सामाजिक अस्मिता रचना के सामाजिक संदर्भ और सामाजिक अस्तित्व से निर्मित होती है। इसीलिए साहित्य के समाजशास्त्र में उस पूरी प्रक्रिया को समझने की कोशिश होती है जिसमें कोई रचना साहित्यिक कृति बनती है। जाहिर है कि साहित्य का समाजशास्त्र समाज से सम्पूर्ण साहित्य प्रक्रिया पर एक कृति से अनेक स्तरीय प्रत्यक्ष तथा परोक्ष सम्बन्धों के विश्लेषण में सुनिश्चित दृष्टि पर जोर देता है।

भारत में कुछ तो भारतीय परंपराओं के विकास और कुछ पश्चिम में तीन-चार सौ साल पहले नवोदित विधाओं के रूप पाकर 19वीं सदी में उपन्यास, कहानी, रिपोर्ताज, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और ऐसी ही कुछ अन्य आधुनिक विधाओं का जन्म हुआ। ये सभी गद्य की विधाएँ हैं जिनका सम्बन्ध जीवन अनुभव और तर्क की बढ़ी महत्ता से है। दुनिया भर में नवजागरण और गद्य के बीच गहरा सम्बन्ध रहा है। क्योंकि स्वतंत्रता के बहुस्तरीय अनुभव व तर्क के लिए गद्य से बेहतर दूसरा माध्यम नहीं है। समाज के तीव्र रुपांतरण और बदलाव का सामना करने के लिए अभिव्यक्ति के नए रूपबंधों, शैलियों और शब्द-सम्पदा की जरूरत स्वाभाविक है।

यह जानने योग्य है कि आखिरकार कोई रुपबंध क्यों अस्तित्व में आता है, किसी युग में कुछ खास रुपबंध या विधाएँ क्यों प्रधान हो उठती हैं? ये सभी प्रश्न समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से चिन्तन की माँग करते हैं।

संभवतः समाज में नए मनोभावों वाले वर्गों के आने और नए ढंग के सुख-दुख बनने से यह स्वाभाविक है कि सृजनशील मनुष्य की अभिव्यक्ति लालसा नई विधाओं के लिए मचलती है। मनुष्य की यही अभिव्यक्ति लालसा संस्मरण विधा के सृजन का भी आधार है। स्मृति ना सिर्फ अतीत को वर्तमान से जोड़ती है बल्कि भविष्य के निर्धारण की पृष्ठभूमि भी तैयार करती है। कहा जा सकता है कि इंसान अपनी स्मृति की आधारशिला पर टिका होता है। उसकी स्मृतियाँ उसकी अस्मिता हैं और ये स्मृतियाँ ही उसके व्यक्तित्व को मांझती है। संस्मरण-विधा की आधारशिला यही स्मृति ही होती है।

**डॉ० रामचंद्र तिवारी** के शब्दों में कहें तो संस्मरण किसी 'स्मर्यमाण' की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू वे सन्दर्भ और वे चारित्रिक वैशिष्ट्य जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाते हैं, उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। स्मर्यमाण को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है। संस्मरण में विषय और विषयि दोनों ही रूपायित होते हैं। इसलिए इसमें स्मरणकर्ता पूर्णतः तटस्थ नहीं हो पाता। वह अपने 'स्व' का पुनः सर्जन करता है।

हिन्दी में यों तो पंडित पद्मसिंह शर्मा के 'पद्मपराग' से सफल संस्मरणों की परम्परा का प्रारंभ स्वीकार किया जाता है, किंतु अधिक कलात्मक और सजीव संस्मरण द्विवेदी युग के बाद ही लिखे गए हैं। द्विवेदी-युग में स्वामी दयानंद, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी श्रद्धानंद, आदि के संस्मरण संगृहीत हैं। डॉ कामेश्वरशरण सहाय ने भारतेंदु-रचित 'कुछ आपबीती कुछ जगबीती' शुद्ध संस्मरणात्मक दृष्टि से लिखी गई हिन्दी की पहली रचना माना है। द्विवेदी-युग के बाद के कुछ प्रमुख संस्मरण और संस्मरणकार हैं : श्रीराम शर्मा कृत बोलती प्रतिमा, महादेवी वर्मा कृत अतीत के चलचित्र; स्मृति की रेखाएँ; पथ के साथी; मेरा परिवार, रामवृक्ष बेनीपुरी कृत माटी की मूरतें आदि।

पिछले कुछ वर्षों के भीतर संस्मरण-लेखन की प्रवृति बढ़ी है। चर्चित संस्मरणों में- सृजन के सेतु, याद हो कि न याद हो, अमराई, मेरा हरदम मेरा दोस्त, चंद सतरें और, औरों के बहाने, लौट आओ धार आदि हैं। वहीं 21वीं सदी के कुछ प्रमुख संस्मरण हैं: आछे दिन पाछे गए, नंगातलाई का गाँव, मेरे हिस्से का शहर, दिल्ली दूर है आदि। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य की पहली महिला संस्करणकार हैं, वर्मा जी से लेकर आज 21वीं सदी में अनेक प्रसिद्ध महिला लेखिका संस्मरण विधा की परंपरा को आगे बढ़ा रही हैं। इस सदी की प्रमुख महिला संस्मरणकार जो इस शोध की आधार भी हैं, वे हैं : ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मृदुला सिन्हा, अचला नागर, चंद्रकांता, पद्मा सचदेव आदि।

साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन इस शोध का आधार उपकरण है। साहित्य का समाजशास्त्र साहित्य के अध्ययन और मूल्यांकन की एक शाखा है जिसमें साहित्य और समाज के संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में साहित्य के अध्ययन की विधियां, नाटकीय प्रस्तुति, रचनाकारों और पाठकों की सामाजिक व वर्गीय स्थिति आदि शामिल हैं। फ्रांसीसी विचारक इपॉलित तेन द्वारा साहित्य के समाजशास्त्र को एक व्यवस्थित दार्शनिक आधार दिया गया। तेन के बाद एक विधा के रूप में साहित्य के समाजशास्त्र को ऊंचाइयों पर पहुंचाने का श्रेय जिन महत्वपूर्ण विद्वानों को जाता है उनमें प्रमुख हैं लियो लॉवेंथल, लूसिये गोल्डमान और रेमंड विलियम्स। भारतीय समाजशास्त्रियों ने सम्पूर्ण भारतीय समाज के परिप्रक्ष्य में जो विचार रखे है उससे पता लगता है कि समाज की समस्यओं की जड़ तक यह गये थे जिसके समाधान हेतु निरंतर प्रयासरत रहे है जिसमें अग्रणी

आंबेडकर, गाँधी थे। साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी साहित्यकार हैं निर्मला जैन, डॉ नगेंद्र, मैनेजर पांडेय, बच्चन सिंह आदि जिन्होंने साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन विस्तार से किया है।

**शोध की आवश्यकता और उपयोगिता :**

‘21 वीं  सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन’ विषय पर शोध कई मायने में महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है।

शिक्षा के साथ स्त्री की चेतना का विकास हुआ। अपने अस्तित्व, अस्मिता और अवस्थिति पर उसे स्वयं विचार करना प्रासंगिक लगा। जब स्त्री को लगा कि उसका अस्तित्व, स्थान, अधिकार और आजादी संकट में है, उसे अपने विचारों को अभिव्यक्ति देनी पड़ी। इसीलिए स्त्री-लेखन का मूल स्वर प्रतिरोध का रहा। यह स्त्री के लिए मुक्ति के प्रयासों का एक द्वार है, अनुभूति और अभिव्यक्ति का द्वार। दूसरे शब्दों में स्त्री-लेखन के साथ ही स्त्री-विमर्श का समय भी आरंभ होता है।

संस्मरण लेखन को भी स्त्री के लिए मुक्ति के प्रयासों का एक द्वार माना जा सकता है। आज महिला संस्मरणकारों का विपुल इतिहास हमारे सामने है। महादेवी वर्मा से शुरू होकर आज ममता कालिया, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती तक महिला संस्मरण साहित्य का इतिहास निरंतर चला जा रहा है।  जहाँ महादेवी वर्मा के संस्मरण अपनी मानवीयता, संवेदना के लिए अग्रगामी संस्मरणकारों का पथ-प्रदर्शक है। वहीं 21 वीं सदी के महिला संस्मरणकारों का साहित्य वर्तमान समय और समाज के साथ अपने सम और विषम संबंधों को समझने की भरपूर कोशिश है। हिंदी संस्मरण साहित्य के इतिहास में महिला लेखिकाओं को वह स्थान एवं दर्जा आज भी नहीं मिल सका है जिसकी वे हकदार हैं। आखिर क्यों? इसके कारणों की तलाश ही इस शोध को महत्वपूर्ण बनाता है। संस्मरण के क्षेत्र में प्रतिभा का विलक्षण विस्फोट महिला-लेखन की प्रामाणिक पहचान के लिए पर्याप्त प्रमाण होता यदि आलोचना के स्तर पर इसकी सम्यक समीक्षा की जाती। महिला रचनाकार की कृतियां अपनी संवेदनाशीलता, तार्किकता और तेवर में बेहद पठनीय होते हुए भी आलोचना के ठंडेपन की शिकार हैं।

आजकल हिन्दी साहित्य में संस्मरणों की बहार है। संस्मरण की बहार यही नहीं है। अमेरिका में लेखन-विधा के गुरु हैं विलियम जिंसर। उन्होंने संस्मरणों के धुआंधार प्रकाशन पर टिप्पणी

की,“यह संस्मरण का युग है। बिरसाई के अंत के पहले कभी भी अमरीकी धरती पर व्यक्तिगत आख्यान की ऐसी जबरदस्त फ़सल कभी नहीं हुई थी। हर किसी के पास कहने के लिए एक कथा है और हर कोई कथा कह रहा है।”

हालाँकि आज जैसी संस्मरण की यह सुखद स्थिति कुछ दशक पहले नहीं थी। आलोचना भी उसे एक गैर महत्वपूर्ण विधा मानकर चलती थी, लिहाजा संस्मरणों की अनदेखी होती थी। विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा नामवर सिंह पर लिखे संस्मरण हक जो अदा न हुआ ने ऐसी धूम मचायी कि एकदम से इस विधा की क्षमता का पुनर्प्रकटीकरण हुआ और संस्मरण लेखन की ओर कई रचनाकार मुड़े। आज हर विधा की परंपरागत सरहदें अशांत है। लेखक विधागत खाँचे से बाहर निकल रहे हैं। इतना निश्चित है कि विधाओं के चिर परिचित रूप बदल रहे हैं। अब विधाओं की सीमाएं टूट रही हैं। साहित्यिक विधाओं में मिश्रण भी एक चलन है। साहित्य–विद्या जब अपनी समीओं का अतिक्रमण करता है तो वह उसकी जीवंतता गतिशीलता को ही उद्धाटित करता है। इसका जीता जागता उदाहरण संस्मरण है।

संस्मरण एक लचीली विधा है। इसका लचीला होना अन्य विधाओं को आत्मसात करना है। यही कारण है कि संस्मरण को कभी रेखाचित्र, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि अन्य विधा मान लेने का भ्रम अक्सर बना रहता है। इसमें आत्मकथा, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, कहानी आदि के तत्व दिखाई देते हैं जिससे संस्मरणों में शैलीगत विविधता का दिखाई देना आम बात हो गई है। जैसे महादेवी वर्मा के संस्मरणों को पढ़ते हुए यह भ्रम बराबर बना रहता है कि हम कहानी पढ़ रहें या संस्मरण। उनके संस्मरण बिल्कुल कथात्मक शैली में लिखे गए हैं।

हालांकि इसी वज़ह से संस्मरण को अन्य विधाओं से अलगाने वाले बिन्दुओं की तलाश होने लगी है। जैसा कि आत्मकथा और संस्मरण में अन्तर करते हुए कहा जाता है कि संस्मरण भी आत्मकथा ही है अलबत्ता वह समग्र आत्मकथा के मुकाबले काफी छोटी होती है। इसमें अतीत के खास क्षणों, महत्वपूर्ण मोड़ों को फिर से जीवित करने की कोशिश होती है। आत्मकथा में निजी जीवन के दस्तावेजीकरण की कोशिश होती है तो संस्मरण में दस्तावेज की शुष्कता के बजाए भावना अधिक सक्रिय हो उठती है।

संस्मरण को रेखाचित्र से इस आधार पर अलग किया जाता है कि रेखाचित्र प्रायः स्थिर जीवन का चित्र होता है वही संस्मरण एक गतिशील प्रक्रिया है जिसकी आधारशिला स्मृति है लेकिन संस्मरण सारतत्व में मनुष्य के होने का ही अर्थ खोलता है। संस्मरण की महत्ता और लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है। जहां संस्मरण में दूसरे के जीवन में झांकने का सुख है वहीं दूसरी तरफ इससे समय-खंड की आत्मीय जानकारी भी उपलब्ध होती है।

शोध की महत्ता को समझने के लिए 21वीं सदी के कुछ प्रमुख महिला संस्मरणकारों के संस्मरण से रूबरू होते हैं :

- **कृति और कृतिकार : मृदुला गर्ग**

हिंदी की प्रसिद्ध कथाकार मृदुला गर्ग ने अपनी साहित्य यात्रा के सहयात्रियों पर इन स्मृति लेखों में जीवन के अनतरंग क्षणों के संस्मरणों को बड़े ही सहज रूप में प्रस्तुत किया है। दिलचस्प बात यह है कि इन संस्मरणों का जीवंत गद्य उबाऊ, बेढंगा, कृत्रिम गद्य नहीं है। इस गद्य में एक तरह की सर्जनात्मकता का स्वाद है। 'कृति और कृतिकार' शीर्षक इस कृति में ग्यारह सहयात्रियों के आत्मीय संस्मरण हैं। यहाँ अज्ञेय, जैनेंद्र, महादेवी वर्मा, मनोहर श्याम जोशी, कृष्णा सोबती, राजेंद्र यादव, योगेश गुप्त, दिनेश द्विवेदी, संगीता गुप्ता, सुनीता जैन तथा मंजुल भगत का संस्मरण है।

- **रवि कथा : ममता कालिया**

लेखिका ममता कालिया ने अपनी  किताब "अन्दाज़-ए-बयाँ उर्फ़ रवि कथा" एक ही व्यवसाय के दो अलग-अलग व्यक्तित्व के बीच प्रेम कहानी का वर्णन किया है। दो लोग जो लेखक होते हुए भी एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। उनमें इस एक समानता के अलावा दूसरी और कोई समानता नहीं है, उनकी रुचि, जीवनशैली, अंदाज, सब कुछ अलग है। ये दो किरदार खुद ममता कालिया और उनके लेखक पति रवींद्र कालिया होते हैं ममता कालिया ने यह किताब अपने दोस्त, अपने प्रेमी और जीवन साथी रवींद्र कालिया पर लिखी है।  इस किताब के जरिए प्रेम विवाह, विवाह जीवन की उलझनों, गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारी, दो भिन्न परिवेश से आए दम्पति के बीच के संबंधों को पाठकों के समक्ष पड़ोसने की कोशिश की है।

## कितने शहरों में कितनी बार : ममता कालिया

हिंदी में इन दिनों संस्मरण विधा केंद्रस्थ होने की जद्दोजहद में है, पर बहुत धीरे-धीरे। ममता कालिया की कृति 'कितने शहरों में कितनी बार' पढकर मन में उथल-पुथल मच जाती है और कई सवाल सिर उठाने लगते हैं। ममता ने इलाहाबाद, मुंबई, कोलकाता और दिल्ली को न जाने कितनी बार रौंदा, कुछ इस तरह कि इन प्रमुख शहरों के सांस्कृतिक स्थल ही नहीं, चाट-पकौडे की दुकानों के साइन बोर्ड तक कब-कब बदले गए, यह तक ममता को याद रह गए, जिसे उन्होंने कितने शहरों में कितनी बार में हूबहू दर्ज कर दिया है। इसे पढकर उनकी याद्दाश्त का लोहा मानना पड़ेगा, वरना कहां किसी को याद रहते हैं वे लोग, जिन्होंने कभी मुग्ध नजरों से हमें निहारा होता है। ममता कालिया के संस्मरण को पढकर लगता है कि कोई कभी संस्मरण लिखे तो ऐसे डूबकर, जैसे 'कितने शहरों में कितनी बार' में ममता जी ने लिखे हैं। 'कितने शहरों में कितनी बार' सिर्फ संस्मरण नहीं हैं, वे उनके आत्मलेख जैसे हो गए हैं।

## दिल्ली शहर दर शहर : निर्मला जैन

एक वक़्त के बाद कोई भी शहर वहाँ रहने वालों के लिए सिर्फ़ शहर नहीं, जीने का तरीक़ा हो जाता है। जिस तरह हम धीरे-धीरे शहर को बनाते हैं, बाद में उसी तरह शहर हमें बनाने लगता है और हम 'दिल्ली वाले', 'मुम्बई वाले' या 'आगरा वाले' कहे जाने लगते हैं। सुपरिचित आलोचक निर्मला जैन की यह कृति एक दिल्ली वाले की तरफ़ से अपने शहर को दिया गया उपहार है। बराबर सजग और चुस्त उनकी लेखनी से उतरी हुई यह किताब बीसवीं शताब्दी की दिल्ली के स्याह-सफ़ेद और ऊँचाइयों-नीचाइयों के साथ न सिर्फ़ उसके विकास-क्रम को रेखांकित करती है, बल्कि उन दिशाओं की तरफ़ भी इशारा करती है जिधर यह शहर जा रहा है, और जिन्हें सिर्फ़ वही आदमी महसूस कर सकता है जिसे अपने शहर से प्यार हो। निर्मला जी की यह किताब 40 के दशक से सदी के लगभग अन्त तक की दिल्ली का देखा और जिया हुआ लेखा-जोखा है। इसमें साहित्य और शिक्षा के मोर्चों पर आज़ादी के बाद खड़ा होता हुआ देश भी है, और वे तमाम राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाएँ भी जिन्हें हमारे भवितव्य का श्रेय दिया जाना है।

- **मार्फत दिल्ली : कृष्णा सोबती**

दिल्ली से कृष्णा सोबती का रिश्ता बचपन से है। आज़ादी से पूर्व उनका वेतनभोगी परिवार साल के छह माह शिमला और छह माह दिल्ली में निवास करता था। अपने किशोर दिनों में वे दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में हॉकी खेलती रही हैं। बँटवारे के बाद लाहौर से आकर वे स्थायी तौर पर दिल्ली की हो गईं। दिल्ली का नागरिक होने पर उन्हें गर्व भी है और इस शहर से प्रेम भी। यहाँ के इतिहास और भूगोल को वे बहुत गहरे से जानती रही हैं। दिल्ली के तीन सौ से ज़्यादा गाँवों को और उनके बदलने की प्रक्रिया को उन्होंने पारिवारिक भाव से देखा है। हर गाँव को उन्होंने पैदल घूमा है। 'मार्फ़त दिल्ली' में उन्होंने आज़ादी बाद के समय की कुछ सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक छवियों को अंकित किया है। यह वह समय था जब ब्रिटिश सरकार के पराए अनुशासन से निकलकर दिल्ली अपनी औपनिवेशिक आदतों और देसी जीवन-शैली के बीच कुछ नया गढ़ रही थी। सड़कों पर शरणार्थियों की चोट खाई टोलियाँ अपने लिए छत और रोज़ी-रोटी तलाशती घूमती थीं। और देश की नई-नई सरकार अपनी ज़िम्मेदारियों से दो-चार हो रही थी। उस विराट परिदृश्य में साहित्य समाज भी नई आँखों से देश और दुनिया को देख रहा था। लेखकों-कवियों की एक नई पीढ़ी उभर रही थी। लोग मिलते थे। बैठते थे। बहस करते थे और अपने रचनात्मक दायित्वों को ताज़ा बनाए रखते थे। बैठने-बतियाने की जगहें, काफी हाउस और रेस्तराँ साथियों की-सी भूमिका निभाते थे। मंडी हाउस और कनाट प्लेस नए विचारों और विचारधाराओं की ऊष्मा का प्रसार करते थे। कृष्णा जी ने उस पूरे समय को सघन नागरिक भाव से जिया। भारतीय इतिहास की कुछ निर्णायक घटनाओं को उन्होंने उनके बीच खड़े होकर देखा। आज़ादी के पहले उत्सव का उल्लास और उसमें तैरती विभाजन की सिसकियों को उन्होंने छूकर महसूस किया। यहां उन्होंने उस दौर की कुछ यादों को ही ताज़ा किया है।

- **हम हशमत : कृष्णा सोबती**

'हम हशमत' बोलते शब्द-चित्रों की एक घूमती हुई रील है। एक विस्तृत जीवन-फलक जैसे घूमता है और सामने एक के बाद एक चित्र उभरते जाते हैं- साफ़ और जीवंत। और, अंत में जब

पूरी रील घूम जाती है तो एक कथा अपने-आप बुन जाती है- एक लंबी जीवन-चित्र-कथा, जिसमें हर चित्र घटना है और हर चेहरा नायक। इन चेहरों में विख्यात लेखक हैं, पत्रकार हैं, टैक्सी ड्राइवर और नानबाई और अन्य अज़ीज़ हैं जिनमें से बहुतेरे आपके परिचित हैं। यही चेहरे हैं जिनसे 'हशमत' मिलते हैं और जो एक-दूसरे से अलग होकर भी परस्पर जुड़े हुए हैं तथा उसी जीवन-प्रवाह के अंग हैं जिसमें हम-आप और सारे ही लोग बह रहे हैं। 'हशमत' को जीवन के सही और सम्पूर्ण मूल्यों की शिनाख्त की बेचैनी है। अंतरंग बातचीत और अपनी तटस्थ दृष्टि के ज़रिए वे साहित्य के वास्तविक संदर्भों को खोजना और समाज व व्यक्ति के सत्य को उजागर करना चाहते हैं, वैचारिक गुत्थियों और व्यवस्थामूलक पेचीदगियों को सुलझाना चाहते हैं। और, अंत में जब 'हशमत' अपना परिचय भी दे डालते हैं तो पाठकीय जिज्ञासा सुखद विस्मय में बदल जाती है क्योंकि 'हशमत' के रूप में स्वयं कृष्णा सोबती हैं जिन्होंने 'हम हशमत' जैसी समर्थ रचना द्वारा फिर यह सिद्ध कर दिया है कि वह एक सिद्धहस्त कथा-लेखिका के साथ-साथ सार्थक रचनादृष्टि से संपन्न शब्द-चित्रकार भी हैं।

□ **हाशिये की इबारतें : चंद्रकांता**

चन्द्रकान्ता की कृतियाँ जहाँ सामयिक व्यवस्था के विद्रूपों एवं स्त्री-विमर्श की जटिलताओं की तहें खोलती हैं, वहीं सम्बन्धों के विघटन और मनुष्य के यांत्रिक होते जाने की विडम्बनाओं के बावजूद मूल्यों और विश्वासों की सार्थकता को नए आयाम देती हैं। कश्मीर पर तीन महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखने के बावजूद चन्द्रकान्ता का लेखन समय के ज्वलन्त प्रश्नों एवं वृहत्तर मानवी सरोकारों से जुड़ा है। स्त्रियों की सोच, आकांक्षाओं, स्वप्नों और संघर्षों की सच्चाइयों से साक्षात्कार करवानेवाली पुस्तक है 'हाशिए की इबारतें'। अपने आत्मकथात्मक संस्मरणों के बहाने चन्द्रकान्ता ने स्त्री-मन के भीतर रसायन को खँगाला है। वहाँ अगर अँधेरे तहख़ाने हैं, तो रोशनी के गवाक्ष भी हैं; चाहों का हिलोरता सागर भी है और प्यास से हाँफता रेगिस्तान भी। बकौल लेखिका : "मैंने इन संस्मरणों में स्त्री-समीक्षा नहीं की है, स्त्री-जीवन की भौतिकी, भीतरी कैमिस्ट्री की दख़लन्दाज़ी से बने गुड्डिल व्यक्तित्व की कुछ गुत्थियों को खोलने की चेष्टा की है। बेटी, माँ, बहन, पत्नी, दादी, नानी के रोल

निभाती स्त्री की सोच, आकांक्षाओं और स्वप्नों में सेंध लगाकर जानना चाहा है कि कई दशकों को पीछे ठेलते, प्रगति के तमाम सोपान पार करने के बाद, स्त्री से जुड़ी परिवर्तनकारी रीति-नीतियों और पुरुष वर्चस्व के अहम् पूरित सोच में कितना कुछ सार्थक बदलाव आ पाया है। घर-परिवार की धुरी स्त्री क्यों केन्द्र में क़दम जमाने से पहले ही बार-बार हाशिए पर धकेल दी जाती है? भूमंडलीकरण के इस दौर में भी क्या स्त्री के लिए कसाईघर मौजूद नहीं, जहाँ ख़ामोश, अपढ़ और बोलनेवाली तेज़-तर्रार, दोनों मिज़ाज की स्त्रियाँ, गाहे-बगाहे शहीद की जाती हैं?"

ये सभी संस्मरण अपने समय के समाज का दर्पण कहला सकते हैं, जिनसे होकर हम अपने अतीत और वर्तमान को समझ सकते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसे दूसरे व्यक्तियों के सहचर्य की आवश्यकता होती है। स्पष्ट है कि सहचर्य में अंतर व्यवहार निहित रहता है। अंतर-व्यवहार ही व्यक्तियों को एक दूसरे से साथ जोड़ता है और सामाजिक संबंधो का निर्माण करता है। सामाजिक सम्बन्ध ही समाज का आधार है। समाजशास्त्र इसी का ही वैज्ञानिक रंग से अध्ययन करता है। इसीलिए समाजशास्त्रीय दृष्टि से साहित्य की अध्ययन पध्दति विकसित हो रही है जो साहित्य के समाजशास्त्र का एक अंग है। आज के साहित्यिक समाजशास्त्री रचना की अस्मिता को स्वीकार करते हुए समाज से उसके संबंध का विश्लेषण करते है। कुछ विचारक साहित्य को एक सामाजिक संस्था मानते है। वे कहते है कि जैसे दूसरी सामाजिक संस्थाएँ सामाजिक प्रक्रिया में बनती है और उसे प्रभावित करती है वही स्थिति साहित्य नाम की भी हैं। आधुनिक समाज में संस्कृति को जानने की कुंजी साहित्य है और साहित्य को समझने की कुंजी मध्यवर्ग के समाज की मानसिकता की जानकारी हैं। साहित्यिक साक्ष्य के बिना समाज का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति सामाजिक जीवन की पूर्णता से अनभिज्ञ ही रहेगा। किसी राष्ट्र के साहित्य को ध्यान से पढ़कर यह बताया जा सकता है कि उसकी जनता किस प्रकार की थी? साहित्य की रचना प्रक्रिया के अध्ययन से सामाजिक जीवन के संबंधों की खरी पहचान की जा सकती है। साहित्यकार के भाव जगत का निर्माण सामाजिक जीवन के साथ उसके सम्पर्क से होता है। उसके विचार आदि इसी सामाजिक जीवन की उपज है। ऐसी परिस्थिति में साहित्य समाज से विच्छिन्न नहीं रह सकता। साहित्य में समाज अपनी गहरी पैठ रखता है वह साहित्य के सभी रूपों और पक्षों को

समग्रता में समझने पर जोर देता हैं। साहित्य के समाजशास्त्र की मुख्य प्रवृत्ति समग्रतावादी है। जिसमें लेखक, पाठक और रचना की भी भूमिका होती है।

**पूर्वकृत शोधकार्य :**

प्रस्तुत शोध विषय **"21वीं सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन"** मेरे संज्ञानानुसार मौलिक और नवीन दृष्टिकोण का प्रतिपादन करने वाला है। इस विषय पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन का अभाव है। इसलिए इस विषय पर शोधकार्य पूर्णतः मौलिक होने वाला है।

**पूर्व में किए गए शोधकार्य :**

1. हिन्दी का संस्मरण साहित्य : स्वरुप, विकास एवं शिल्प
2. स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित हिन्दी संस्मरण का अनुशीलन
3. हिन्दी संस्मरण साहित्य में मानवेतर पात्रों की संवेदना भूमि: महादेवी वर्मा के संस्मरण-साहित्य के विशेष सन्दर्भ में
4. हिन्दी संस्मरण साहित्य और पांडेय बेचन शर्मा उग्र
5. कृष्णा सोबती रचित संस्मरण साहित्य : एक अनुशीलन
6. रामवृक्ष बेनीपुरी और रामधारी सिंह दिनकर के संस्मरण साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
7. इक्कीसवीं सदी का हिन्दी संस्मरणात्मक साहित्य : एक अध्ययन
8. आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री के संस्मरण-साहित्य का समीक्षात्मक विश्लेषण
9. हिन्दी के संस्मरण साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन

**शोध प्रविधि :**

प्रस्तुत शोध **"21वीं सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन"** के अध्ययन में मैं आगमनात्मक और निगमनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करूँगा। इसके अलावा शोध कार्य को प्रस्तुत करने हेतु मैं विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक और

वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करूँगा। व्याख्यात्मक या वर्णनात्मक शोध प्रविधि में मानव-जीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर, चाहे वे साहित्य, समाज-विज्ञान या शुद्ध विज्ञान से सम्बन्ध रखती हों, अनुसन्धान किया जाता है। संस्मरण साहित्य की रचना प्रक्रिया को समझने हेतु साक्षात्कार का प्रयोग करूँगा।

**शोध की परिकल्पना :**

प्रस्तावित शोध विषय "**21वीं सदी की महिला संस्मरणकारों के संस्मरण-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन**" के संबंध में शोधार्थी की परिकल्पना है कि महिला संस्मरणकारों के संस्मरण में उनकी स्मृतियों के साथ-साथ उनके अस्तित्व का गहरा जुड़ाव है, उनके अतीत एवं वर्तमान का संवेदनात्मक जुड़ाव है तथा सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक परिस्थितियां एक-दूसरे से जुड़ी है, जिसके समाजशास्त्रीय अध्ययन द्वारा संस्मरण साहित्य के बदलते स्वरूपों के साथ-साथ लेखिकाओं की सृजनशीलता, अभिव्यक्ति के स्वरूप एवं उनके अन्तर्मन को परत-दर-परत समझ सकेगा तथा बाजारवाद, भौतिकवाद, अस्तित्ववाद, प्रयोजनवाद, नव-साम्राज्यवाद जैसे वादों के संदर्भ में उनका अध्ययन कर सकेगा। भूमंडलीकरण के दौर में भागती जिंदगी के बीच में अपनी सुधि लेने के साथ दूसरों की सुधि लेती संस्मरण साहित्य इस समय की जरूरत बन गई है। अन्यों की सुधि लेना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि धीरे-धीरे समाज आत्मकेंद्रित होता जा रहा है और इस शोध के माध्यम से बढ़ती आत्मकेंद्रियता के कारणों की खोज खबर लिया जा सकेगा। इस दौर में स्मृति-खंड को सजीव और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करती महिला संस्मरणकारों की चुनौतियों से शोध के माध्यम से शोधार्थी रू-ब-रू हो सकेगा।

**शोध अध्याय का विभाजन :–**

**भूमिका**

**प्रथम अध्याय : समाजशास्त्रीय अवधारणा के निकष पर संस्मरण साहित्य**

सामाजिक स्तरीकरण व 21वीं सदी का संस्मरण साहित्य

**द्वितीय अध्याय : हिन्दी संस्मरण की विकास प्रक्रिया में 21वीं सदी का हिन्दी संस्मरण**

21वीं सदी के प्रमुख महिला संस्मरणकारों का संक्षिप्त परिचय

**तृतीय अध्याय : 21वीं सदी के महिला संस्मरणों में संवेदना का नया धरातल**

महिला संस्मरण में स्त्री अस्मिता का प्रश्न

**चतुर्थ अध्याय : 21वीं सदी के महिला संस्मरणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण**

21वीं सदी के बदलते सामाजिक परिवेश और संस्मरण साहित्य की बदलती भूमिका

**पंचम अध्याय : 21वीं सदी के महिला संस्मरण साहित्य का शिल्पगत वैशिष्ट्य**

अभिव्यक्ति का नया कलेवर

**उपसंहार**

**परिशिष्ट : संदर्भ ग्रंथ**

आधार ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

कोश ग्रंथ

पुस्तकालय

साक्षात्कार

**संदर्भ ग्रंथ :**

**आधार ग्रंथ :**


- वह सफ़र था कि मुकाम था: मैत्रयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन संस्करण-2017
- हम हशमत 3 : कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2012
- हम हशमत 4 : कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2019
- मार्फत दिल्ली: कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2018
- दिल्ली शहर दर शहर : निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2009
- कितने शहरों में कितनी बार: ममता कालिया, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2010
- हाशिये की इबारतें: चंद्रकांता , राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2009
- मेरे भोजपत्र : चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2009
- अमृतलाल नागर की बाबूजी बेटाजी एन्ड कंपनी : अचला नागर, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2024
- यादों के गलियारे : नसिरा शर्मा, साहित्य भारती, संस्करण-2009
- कल परसों के बरसों : ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2011
- लता मंगेशकर : ऐसा कहां से लाऊं: पद्मा सचदेव, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2012
- कृति और कृतिकार : मृदुला गर्ग, सस्ता साहित्य मंडल, संस्करण-2013
- यादें... यादें और यादें : पुष्पा भारती, प्रभात प्रकाशन, संस्करण-2016
- बारहदरी : पद्मा सचदेव, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, संस्करण-2016
- स्मृतियां जो संगिनी बन गयी : मृदुला सिन्हा, मेधा प्रकाशन हाउस, संस्करण-2019
- अमराई : पद्मा सचदेव, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2000
- अन्तिम सतरें : अनिता राकेश, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2018

- अतिरिक्त सतरें : अनिता राकेश, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2018
- सतरें और सतरें : अनिता प्रकाशन, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण-2002
- जिन्हें मैंने जाना : उषा महाजन, सामयिक प्रकाशन, संस्करण-2011
- इत्यादि : गगन गिल, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2019
- वे नायाब औरतें : मृदुला गर्ग, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2023

**सहायक ग्रंथ :**

- गद्य की पहचान : अरुण प्रकाश, अंतिका प्रकाशन, संस्करण-2012
- हिन्दी का गद्य साहित्य : डॉ० रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण-2020
- हिन्दी का संस्मरण साहित्य : डॉ० कामेश्वरशरण सहाय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण-1982
- हिन्दी गद्य शैली का विकास : रेशू चौहान, डायमंड क्रियेशन, संस्करण-2020
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ० चातक और प्रो. राजकुमार शर्मा, कॉलेज बुक डिपो
- हिन्दी का आत्मकथात्मक साहित्य : डॉ० चम्पा श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2018
- बिहार का संस्मरण साहित्य : डॉ० आशा कुमारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण-1988
- संस्मरण साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ० बाबूराव देसाई, पराग प्रकाशन, संस्करण-2018
- संस्मरण और रेखाचित्र : उर्मिला मोदी ( सं. ), अनुराग प्रकाशन, संस्करण-2019
- साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार : डॉ० हरिमोहन, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2005
- कथेतर-माधवहाड़ा (सं.), साहित्य अकादमी, संस्करण-2017
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2018

- हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ० नगेंद्र व डॉ हरदयाल ( सं. ), मयूर किताब प्रकाशन, संस्करण-2018
- हिन्दी साहित्य का साहित्य : आ. रामचंद्र शुक्ल, प्रभात प्रकाशन, संस्करण-2017
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण-2017
- आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता एवं नव-समाजशास्त्रीय सिद्धांत: एस.एल. दोषी, रावत प्रकाशन, संस्करण-2012
- आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक : एस.एल. दोषी, रावत प्रकाशन, संस्करण-2007
- साहित्य का समाजशास्त्र : डॉ० नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
- साहित्य का समाजशास्त्र : बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2022
- साहित्य और समाजशास्त्रीय दृष्टि : मैनेजर पांडेय, आधार प्रकाशन, संस्करण-2016
- साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन : निर्मला जैन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, संस्करण-2009
- महिला लेखन के सौ वर्ष: 20वीं सदी : गद्य साहित्य: ममता कालिया( सं. ), लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2023
- कथा-समय में तीन हमसफ़र : निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2015
- हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली: डॉ० अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2016
- संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, संस्करण-1952
- माटी की मूरतें : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रभात प्रकाशन, संस्करण-2019
- मेरा परिवार : महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2019
- सर्जना पथ के सहयात्री : निर्मल वर्मा, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2017

- हम हशमत 2: कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-1999
- छूटी सिगरेट भी कमबख्त : रवींद्र कालिया, सेतु प्रकाशन, संस्करण-2023
- दुनिया मेरे आगे : प्रियदर्शन, सेतु प्रकाशन, संस्करण-2021
- एक सड़क एक जगह : मंगलेश डबराल, सेतु प्रकाशन, संस्करण-2019
- सुधियाँ उस चंदन के वन की : विष्णुकांत शास्त्री, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2015
- मूरतें माटी और सोने की : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2017
- जीवन क्या जिया : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2023
- रेणु की तलाश : भारत यायावर, सेतु प्रकाशन, संस्करण-2021
- वे देवता नहीं हैं : राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2000
- नंगातलाई का गाँव : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2016
- चंद सतरें और : अनिता राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण-1975
- बहुवचन : अशोक मिश्र( सं. ), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा का प्रकाशन, अंक : 54-55, जुलाई-दिसम्बर 2017, संस्मरण विशेषांक
- अपनी माटी : माणिक और जितेन्द्र यादव ( सं.), वेब पत्रिका
- समालोचना, वेब पत्रिका

**शोध-निर्देशिका**

**डॉ० मंजरी खरे**
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

**शोधप्रज्ञ**

**मलय नीरव**
पैट क्रमांक- E2209019
पिता– अनिल कुमार सिंह
वार्ड न०– 21, रतनपुर
पो०+जिला– बेगूसराय (बिहार)